56

''हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखा दे''

लूका 11:1-13, एक निकट दृष्टि

मुझ से लोगों को सिखाने के ढंग बताने के लिए कहा जाता है जैसे कि सिखाने और प्रचार करने, विज़ुअल एड तैयार करने, लिखने, यहां तक कि सामग्री को इस्तेमाल करने के लिए तैयार करने-परन्तु मुझ से कभी किसी ने यह नहीं कहा कि ''डेविड, मुझे प्रार्थना करना सिखा।'' परन्तु यह विनती मसीह के प्रेरितों ने उससे की थी: ''फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था: और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से[1] एक ने उस से कहा; हे प्रभु, जैसा यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया, वैसे ही हमें भी तू सिखा दे'' (लूका 11:1)।

प्रेरितों को प्रार्थना करने के बारे में थोड़ा बहुत ज्ञान था। ''उन्हें वे प्रार्थनाएं आती थीं, जो उन्होंने आराधनालय की पढ़ाई में सीखी थीं।''[2] वे ''रब्बियों द्वारा कही जाने वाली प्रार्थनाओं, मन्दिर के याजकों के [श्लोकों] और फरीसियों की ऊंची और भावपूर्ण प्रार्थनाओं से'' परिचित थे।[3] फिर भी यीशु की प्रार्थनाएं तथा प्रार्थना का जीवन उनसे अलग थे। उन्होंने उसे ''जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना'' करते देखा था (लूका 5:16)। उन्होंने उसे ''प्रार्थना करने अलग पहाड़ पर'' जाने (मत्ती 14:23) और ''परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात'' बिताते देखा था (लूका 6:12)। कई बार सुबह उठने पर, वे देखते थे कि यीशु उनके पास नहीं होता था। उन्हें वह प्रार्थना में सिर झुकाए हुए मिलता था (देखें मरकुस 1:35-37क)। इसके अलावा उन्होंने देखा था कि प्रार्थना ने प्रभु के लिए क्या किया था। उन्होंने उसे अपने पिता से बात करने के बाद घुटनों से उठकर नई सामर्थ और बल पाते देखा था। वे भी उसके जैसी सामर्थ चाहते थे। इसीलिए उन्होंने उससे विनती की, ''हे प्रभु'' हमें प्रार्थना करना सिखा दे।

यीशु का उत्तर इस बाइबल पाठ की 2 से 13 आयतों में मिलता है। उसने अपने प्रेरितों को प्रार्थना की हर बात नहीं बताई, पर उन्हें प्रार्थना के अपने जीवन में सुधार की इच्छा करने वाले हर व्यक्ति के लिए आवश्यक मूल सत्य अवश्य बताए।

प्रार्थना में लगे रहें (आयतें 2-4)

उसने पहले तो वही दोहराया, जिसे हम प्राय: ''प्रभु की प्रार्थना'' कहते हैं:

> जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो; हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में न ला (आयतें 2-4)।

और सही ढंग से इसे ''चेलों की प्रार्थना'' या ''आदर्श प्रार्थना'' कहा जा सकता है। इसका विस्तृत और प्रसिद्ध भाग पहाड़ी उपदेश में मिलता है (मत्ती 6:9-15)।[4] इस उदाहरण से हम परमेश्वर के निकट आने के बारे में काफी सीख सकते हैं।

परमेश्वर के पास हम उसे अपना *पिता* मानकर आते हैं:[5] प्रार्थना का आरम्भ ''हे पिता'' शब्द से होता है।

परमेश्वर के पास हम उसे *ईश्वरीय जीव* जानकर आते हैं: ''तेरा नाम पवित्र माना जाए।'' ''पवित्र'' माने जाने का अर्थ ''पवित्र जानना'' है। दस आज्ञाओं में तीसरी आज्ञा थी कि ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना'' (निर्गमन 20:7क)। हर प्रार्थना में सबसे पहले यही ध्यान देना आवश्यक है कि परमेश्वर की महिमा और स्तुति हो, उसे सम्मान मिले।

हम परमेश्वर के पास उसे *सम्प्रभु* मानकर आते हैं: ''तेरा राज्य आए।'' परमेश्वर का राज्य लोगों के मनों तथा जीवनों में सर्वशक्तिमान का सिंहासन है। ''तेरा राज्य आए'' की प्रार्थना हम उसी अर्थ में नहीं कर सकते, जिसमें पिन्तेकुस्त का दिन आने से पहले चेलों ने की थी, क्योंकि राज्य/कलीसिया तो आ चुका है[6]-परन्तु हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि सब जगह सब लोग परमेश्वर को अपने जीवनों का राजा बनाएं।

हम परमेश्वर को *प्रबन्ध करने वाला* मानकर उसके पास आते हैं: ''हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे।'' खाने के लिए काम करना आवश्यक है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:10), परन्तु इसके साथ ही यह बात समझनी भी आवश्यक है कि सभी आशिषें प्रभु की ओर से मिलती हैं (याकूब 1:17)।

हम परमेश्वर को *न्यायी* जानकर उसके पास आते हैं, जिसके हाथ में हमारा भविष्य है: ''और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों[7] को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।'' दो बातें हैं ''जो किसी मसीही की प्रसन्नता तथा उपयोगिता को नष्ट कर देंगी: जीवन में पाप का अंगीकार न करना और क्षमा रहित पाप और कड़वा, कठोर व दूसरे को क्षमा न करने वाला मन।''[8] आदर्श प्रार्थना में दोनों की ही बात की गई है।

हम परमेश्वर को *सुरक्षा देने वाला* जानकर उसके पास आते हैं। ''और हमें परीक्षा में न ला।'' क्योंकि परमेश्वर ''किसी की परीक्षा आप नहीं करता'' (याकूब 1:13), इस विनती का अर्थ यह है कि ''हे प्रभु, हमें हर उस परीक्षा से जो हमें वश में कर लेती है, बचा

ले'' (देखें याकूब 1:14, 15; 1 कुरिन्थियों 10:13)। एफ़. वी. मैक्फेट्रिज ने इस रूपक का इस्तेमाल किया: ''पापों की क्षमा सांप के काटे का इलाज है; यह प्रार्थना [का भाग] हमें सांप के हमले वाले क्षेत्र से दूर रखने की इच्छा है।''[9]

आदर्श प्रार्थना में पूरा जीवन ही आ जाता है: इसमें *वर्तमान* आवश्यकता बताई गई है: ''हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।'' इसमें *पिछले* अपराध की बात है: ''हमारे अपराधों को क्षमा कर।'' इसमें *भविष्य की* परीक्षाओं की बात है: ''और हमें परीक्षा में न ला।''[10]

आदर्श प्रार्थना के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता था, परन्तु इसके अध्ययन से हम एक ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं और वह यह है कि हम सभी को प्रार्थना की *आवश्यकता* है। एल्फ्रेड, लॉर्ड टेनिसन ने लिखा है, ''प्रार्थना से इतनी बातों पर विजय पाई जाती है, जितनी यह संसार स्वप्न भी नहीं देख सकता।''[11] रिचर्ड फोस्टर ने प्रार्थना पर अपनी पुस्तक का उप-शीर्षक *फाइंडिंग द हार्ट'स टू होम* दिया है।[12] परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा था, ''मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा'' (यिर्मयाह 33:3क)। यीशु ने कहा, ''और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा'' (मत्ती 21:22)।

प्रार्थना पर मसीह के पहले पाठ को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है: ''प्रार्थना में बने रहो।'' पहले तो आपको यह एक अजीब सलाह लग सकती है। कई कलाओं के लिए काम से पहले काफ़ी पढ़ाई करनी पड़ती है, परन्तु प्रार्थना करना सीखने से पहले, पहला काम यह है कि आप प्रार्थना करना *आरम्भ* करें।[13] परमेश्वर के पास जाएं। परमेश्वर के पास *हर* आवश्यकता लेकर जाएं।

गरचि इम्तिहान हो सामने,
या तकलीफ़ मुसीबत हो
तब दिलेर और शाद तुम होकर,
बाप को जाकर ख़बर दो।[14]

दृढ़ता से लगे रहें (आयतें 5-8)

प्रार्थना करने के लिए अपने चेलों को प्रोत्साहित करने के लिए, यीशु ने हंसाने वाला एक दृष्टांत बताया:

> तुम में से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर उस से कहे, कि हे मित्र; मुझे तीन रोटियां दे। क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया है, और उसके आगे रखने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। और वह भीतर से उत्तर दे, कि मुझे दुख न दे; अब तो द्वार बन्द है, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिए मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता? मैं तुम से कहता हूं, कि यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी उसके लज्जा छोड़कर मांगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा (आयतें 5-8)।

उस जमाने में, मेहमाननवाजी सामाजिक शिष्टाचार ही नहीं, एक व्यावहारिक आवश्यकता तथा नैतिक दायित्व भी होती थी। सराय बहुत कम और दूर-दूर ही मिलती थीं।[15] जानकार हो चाहे अजनबी, घर वालों से उसे खाना और रहने के लिए जगह देने की उम्मीद की जाती थी। इस दृष्टांत में, एक मित्र आधी रात के समय आया। हम नहीं जानते कि वह इतनी रात को क्यों आया। हो सकता है कि उसे समय का पता न लगा हो। हो सकता है कि उसे रास्ते में कोई मुश्किल आ गई हो। हो सकता है कि उसने दिन की गर्मी से बचने के लिए रात को सफ़र किया हो।[16] कारण चाहे जो भी हो, वह आधी रात को बिन बताए किसी के घर चला गया। उसके पास रहने के लिए तो जगह थी, पर खाना नहीं था; खाने के सामान वाली अलमारी खाली थी।

काफी परेशान करने वाली स्थिति थी। उस समय रात भर खुली रहने वाली खाने की दुकानें नहीं होती थीं।[17] घर वाला क्या करता? उसने सोचा, ''मेरा एक मित्र पास ही तो रहता है। उसी से रोटी मांग लाता हूं।'' वह उस मित्र के घर चला गया। गेट बन्द करके ताला लगा दिया गया था, खिड़कियां-दरवाज़े बन्द कर दिए गए थे।[18] इसके बावजूद वह आदमी पीछे नहीं हटा, उसने दरवाज़ा खटखटा दिया।[19]

अन्दर से किसी ने नींद में आवाज़ दी होगी: ''कौन है? क्या चाहिए?''

बाहर खड़े आदमी ने कहा, ''हे मित्र; मुझे तीन रोटियां दे। क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया है, और उसके आगे रखने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है'' (आयतें 5ख, 6)। उसने तीन रोटियां मांगीं, ताकि एक उसके लिए, एक उसके अतिथि के लिए और, ''एक उदारता के प्रमाण के रूप में अपने पास रखने'' के लिए हो।[20]

सड़ा सा जवाब मिला: ''मुझे दुख न दे; अब तो द्वार बन्द है और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिए मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता'' (आयत 7)। कई घरों में एक ही कमरा होता था। रात को, सोने के लिए चटाइयां फ़र्श पर बिछा दी जाती थीं। जिस घर में कई बच्चे हों, वहां पूरा कमरा बच्चों से भरा होता था।[21] सर्दी में बिस्तर से बाहर निकलते हुए (चूल्हे की आग बुझ गई है), और अंधेरे में लड़खड़ाते हुए रजाइयों पर से कूदते हुए, तीन रोटियां ढूंढ़ने के लिए उठने की कल्पना करें (वहां कोई बत्ती नहीं थी)! आप समझ सकते हैं कि वह आदमी मन ही मन कह रहा होगा, ''चला जा!''

परन्तु रोटी मांगने वाला ''न'' नहीं सुनना चाहता था। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं, कि यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी उसके *लज्जा छोड़कर* मांगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा'' (आयत 8)। उनमें हुई बातचीत की कल्पना करना कठिन नहीं है:

(ठक, ठक, ठक।)

''मैंने कहा चला जा! मैंने बच्चों को बड़ी मुश्किल से सुलाया है। इनमें से अगर एक भी उठ गया तो मैं रात भर सो नहीं पाऊंगा!''

''पर मुझे तो रोटी चाहिए ही चाहिए!''

''नहीं!''

(ठक, ठक, ठक।)

''बन्द कर, ठक-ठक! शोर से मेरी पत्नी जाग जाएगी और अगर तू ने शोर बन्द न किया, तो हम दोनों को परेशानी होगी। जब मेरी पत्नी खुश नहीं होती, तो *कोई* खुश नहीं होता!''[22]

''पर मुझे तो रोटी *चाहिए* ही चाहिए!''

''नहीं!''

(ठक, ठक, ठक।)

''अच्छा बाबा, रुक जाओ। तूने सब को जगा ही दिया! यह ठक-ठक बन्द कर और मैं देखता हूं अगर घर में कुछ पड़ा हो!''

अनुवादित शब्द ''लज्जा'' इस तथ्य की ओर संकेत हो सकता है कि मेजबान के पास अगर अपने अतिथि के लिए देने को कुछ न होता तो उसे लज्जित होना पड़ता। निश्चय ही वह हठ में ''निर्लज'' था। दरवाज़ा खटखटाने से सब पड़ोसी जाग गए होंगे। सब बत्तियां जल गई थीं। कुत्ते भौंक रहे थे। क्रोधित लोग उसे शोर मचाना बन्द करने के लिए कह रहे थे। उसका चेहरा शर्म से लाल पड़ गया होगा, पर फिर भी रोटियां मिलने तक वह वहां से नहीं हिला।

क्या इस दृष्टांत का उद्देश्य यह सिखाना है कि परमेश्वर उस मित्र की तरह है, जिससे कुछ मांगने के लिए उसे तंग करना आवश्यक है? बेशक नहीं। प्रार्थना पर यीशु की शिक्षा के दौरान दिए गए अन्तिम उदाहरण को देखने के लिए आयत 13 पर ध्यान दें: ''सो जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा *क्यों न* देगा?'' दृष्टांत के संदेश को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: ''यदि ढीठ बनकर कठोर मित्र से रोटियां ली जा सकती हैं, तो स्वर्गीय पिता से *क्यों नहीं,* जो आपको आशीष देने को तैयार है, यदि आप हठ से विनती करें तो वह उसका उत्तर अवश्य देता है!'' बाद में यीशु ने अपने चेलों को एक ऐसा ही दृष्टांत बताया, जिसकी भूमिका में ये शब्द थे: ''इस के विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए'' (लूका 18:1)। क्रिस बुलर्ड ने कहा कि दृष्टांत का उद्देश्य ''हमें परमेश्वर के न कहने पर काबू पाना सिखाना नहीं बल्कि यह बताना था कि हम उसकी इच्छा को कैसे मानें।''[23]

परमेश्वर यह जानना चाहता है कि हम अपनी विनतियों के प्रति *गम्भीर* हैं। वह दोचित्ते मन की प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता। बहुत सी प्रार्थनाएं जितनी आसानी से कही जाती हैं, उतनी ही आसानी से भूल भी जाती हैं। इससे पहले कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं से प्रभावित हो, पहले *हमारा* उनसे प्रभावित होना आवश्यक है। वे हमारे मनों से निकलनी चाहिए!

धीरज रखें (लूका 11:9, 10)

हठ पर ज़ोर यीशु के अगले शब्दों में भी रहा: ''और मैं तुम से कहता हूं; कि मांगो, तो

तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है वह पाता है; और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा'' (आयतें 9, 10)। दृष्टांत में स्वाभाविक बात को देखा जा सकता है: घबराया हुआ मेज़बान अपने मित्र के लिए रोटी *ढूंढ़ रहा* था, उसने किसी दूसरे मित्र का द्वार *खटखटाया था* और आवश्यक सामग्री के लिए *मांगा*।

इन आयतों से जो शिक्षा ली जा सकती है, वह यह है कि हमें जो भी चाहिए उसके लिए हमें परमेश्वर से *मांगना* चाहिए। याकूब ने लिखा है, ''तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि मांगते नहीं'' (याकूब 4:2ग)।

इन आयतों में यह भी ज़ोर दिया गया है कि हमें *हठ* से विनतियां करनी चाहिए। मूल शास्त्र में अनुवादित शब्द ''मांगो,'' ''ढूंढ़ो,'' और ''खटखटाओ'' वर्तमान काल में ही हैं, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देते हैं। आयत 9 का अक्षरश: अर्थ है, ''मांगते *रहो,* तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ते *रहो* तो पाओगे; खटखटाते *रहो* तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।'' अब्राहम पर ध्यान दें जिसने सदोम और अमोरा के लिए लगे रहकर प्रार्थना की थी (उत्पत्ति 18:22-32)। पौलुस पर विचार करें, जिसने अपने शरीर के कांटे के बारे में प्रार्थना की (2 कुरिन्थियों 12:8)। मसीह पर विचार करें, जिसके प्रार्थना करते हुए पसीना मानो लहू की बूंदों की तरह गिर रहा था (लूका 22:44)। तीनों प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने तक प्रार्थना करते रहे।[24]

इस वाक्य में क्रियाओं का क्रम केवल लगे रहने का ही नहीं, बल्कि और भी ज़ोर से लगे रहने का संकेत देता है। ढूंढ़ना मांगने से बढ़कर है, और खटखटाने के लिए ढूंढ़ने से बढ़कर काम करना पड़ता है। हमारी प्रार्थनाएं *निरन्तर* होनी चाहिए। ''धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16ख)।[25]

हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? हमें हठ से प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? हमें प्रार्थना क्यों करते रहना चाहिए? क्योंकि, बाइबल की इन आयतों के अनुसार, परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है। इन आयतों में हर कार्य का उपयुक्त उत्तर है: जिसने मांगा उसने पाया, जिसने ढूंढ़ा उसे मिला और जिसने खटखटाया उसके लिए खोला गया। हठी मेज़बान के दृष्टांत में यह सच्चाई मिलती है कि मांगने वाले, ढूंढ़ने वाले, खटखटाने वाले आदमी को तीनों रोटियां मिलीं, जिनकी उसे आवश्यकता थी।

क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर अपने किसी बच्चे द्वारा की गई हर विनती का उत्तर ''हां'' में देता है? नहीं। मसीह ने दुखों का ''कटोरा'' हटाए जाने के लिए कहा (मत्ती 26:39), परन्तु यह नहीं हटा। पौलुस ने कष्ट के अपने ''कांटे'' को निकालने के लिए कहा (2 कुरिन्थियों 12:7, 8), परन्तु उसे नहीं निकाला गया। बाइबल के हमारे पाठ के भाग (लूका 11:11-13) में परमेश्वर की तुलना सांसारिक पिताओं से की गई है। हम में से जो पिता हैं, क्या हम अपने बच्चों की विनतियों के लिए हमेशा ''हां'' ही कहते हैं?[26] नहीं। कई बार हमारा उत्तर ''न'' होता है और कई बार हम कहते हैं ''अभी रुक जाओ।''[27] हम यह भी कह सकते हैं, ''नहीं, पर इससे भी अच्छा यह दूसरा ले ले।'' परन्तु

यदि हम अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, तो हम हमेशा उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर *देते* हैं और 8 से 10 आयतों में यही बात समझाई गई है कि यदि हम हठ से और धीरज से लगे रहें तो परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर *देता* है।

सकारात्मक हों (लूका 11:11-13)

प्रार्थनाएं निष्ठापूर्वक करते रहने का हमारे पास हर कारण है। इस बात पर मसीह के अन्तिम शब्दों पर फिर ज़ोर दिया गया है:

> तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे: या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे? या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? सो जब तुम बुरे होकर[28] अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा (आयतें 11-13)।

दृश्य एक। एक लड़का अपने पिता के पास आता है और मछली मांगता है। यह एक छोटी सी, अचार वाली मछली होगी, जो उस क्षेत्र में स्नैक के रूप में दी जाती थी।[29] ''अच्छा है,'' पिता मुस्कराते हुए कहता है। बच्चा अपना हाथ बाहर निकालता है, और उसका पिता उसके हाथ में एक छोटा सा रेंगता हुआ सांप रख देता है! यह तो बहुत ही डरावना दृश्य होगा!

दृश्य दो। एक लड़का अपने पिता के पास आता है और एक अण्डा मांगता है। यह सम्भवतया पूरी तरह से उबला हुआ अण्डा है, जो एक छोटे लड़के के लिए ले जाना आसान और भूख लगने पर खाने के लिए काफ़ी है। ''मुझे तुम्हें अण्डा देकर प्रसन्नता होगी,'' एक छोटी टोकरी निकालते हुए पिता कहता है। ''आगे बढ़कर निकाल ले।'' जब लड़का अपना हाथ टोकरी में डालता है, तो कोई अण्डा नहीं मिलता-एक बिच्छु मिलता है, जो काटने को तैयार है![30] कितना खतरनाक है!

यीशु ने कहा कि जो पिता अपने बच्चों से प्रेम रखते हैं, वे उनके साथ ऐसा मज़ाक नहीं करते, और न ही स्वर्गीय पिता ऐसा करता है। ''सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा'' (आयत 13)। इससे पहले जब प्रभु ने ऐसे ही रूपक का इस्तेमाल किया था, तो उसने कहा था, ''तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा!'' (मत्ती 7:11ख)। अब कई महीने बाद, उसने परमेश्वर के सबसे उत्तम उपहारों में से एक अर्थात पवित्र आत्मा की बात की, जो बाद में उन सब को मिलना था, जिन्होंने उसके नाम में बपतिस्मा लेना था (प्रेरितों 2:38)। लियोन मौरिस ने लिखा है:

> लूका ... पवित्र आत्मा के दान को हमारी सबसे बड़ी भलाई के रूप में देखता है। इसे ''करिश्माई'' दानों के अर्थ में समझने का कोई कारण नहीं है। यह हवाला तो सामान्य

मसीही जीवन में आत्मा के काम का है, जैसा कि रोमियों 8 में बताया गया है।[31]

हमने पहले ध्यान दिया था कि आवश्यक नहीं कि परमेश्वर हर विनती का उत्तर ''हां'' के साथ ही दे, पर वह अपने बच्चों की हर प्रार्थना का उत्तर देता अवश्य है। जब वह उत्तर देता है, तो हमेशा वही देता है ''जो अच्छा है।'' उसकी मुख्य दिलचस्पी इस बात में है कि लम्बे समय तक हमारे लिए कौन सी बात भली है। हो सकता है कि उस समय हमें उसका उत्तर ठीक न *लगे*! परन्तु अन्त में आश्वस्त हो सकते हैं कि ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (रोमियों 8:28)। प्रार्थना में हमारे सकारात्मक रहने का हर कारण है!

सारांश

चेलों के लिए यह सीखना आवश्यक था कि प्रार्थना कैसे करनी चाहिए। उनके सामने गतसमनी में, उनके प्रभु की परीक्षाएं, उसे कोड़ों से मारा जाना, खून की प्यासी भीड़ के ताने, क्रूस का आतंक और कब्र की अंधेरी खामोशी थी।[32] आज हमें भी परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। हमारे लिए भी प्रार्थना करना सीखना उतना ही आवश्यक है। प्रार्थना पर और बहुत कुछ कहा जा सकता है, परन्तु आरम्भ करने के लिए हमारे लिए लूका 11:1-13 की सच्चाइयां ही काफ़ी होनी चाहिए:

- प्रार्थना में लगे रहें: करने से आप सीखते हैं।
- लगे रहें: दृढ़ रहने से आप सफल होते हैं।
- धीरज रखें: मांगने से आपको मिलता है।
- सकारात्मक हों: प्रार्थना करने से आप आशीषित *होंगे*।

परन्तु इस बात को समझें कि प्रार्थना का जीवन तब तक आरम्भ नहीं किया जा सकता, जब तक आप परमेश्वर को सचमुच में ''पिता'' नहीं कह सकते (लूका 11:2)। क्या आप परमेश्वर की सन्तान हैं (गलातियों 3:26, 27)? क्या आपने ''जल और आत्मा से जन्म'' ले लिया है (यूहन्ना 3:5; देखें 1 पतरस 1:23; प्रेरितों 2:38)? यदि आप पहले ही परमेश्वर की सन्तान हैं, तो क्या आप अपने पिता के निकट रहे हैं? आपके और परमेश्वर के बीच में केवल एक ही बात रुकावट बन सकती है और वह है पाप (यशायाह 59:1, 2)। यदि आपको अपने पाप धोने के लिए बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है (प्रेरितों 22:16), और यदि आप भटके हुए मसीही हैं, जिसे प्रभु के पास वापस आने की आवश्यकता है (गलातियों 6:1; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16), तो टालमटोल न करें। अभी उसकी बात मान लें!

नोट्स

एफ़. वी. मैक्फेरिज ने लूका 11:1-13 को ''प्रार्थना का आरम्भ'' कहा है।[33] एक और सम्भावित शीर्षक ''प्रार्थना के अपने जीवन में अच्छा आरम्भ कैसे करें'' होगा। यदि आपके सुनने वाले इस शब्द का अर्थ समझते हैं, तो आप ''प्रार्थना के जीवन में उछलना आरम्भ कैसे करें'' बोल सकते हैं। एक और ढंग ''सामर्थपूर्ण प्रार्थना का 'रहस्य' '' हो सकता है। यदि चेले यह सोच लेते कि यीशु अपने प्रार्थना पूर्वक जीवन का कोई पुराना ''रहस्य'' बताने जा रहा है, तो उन्हें निराशा ही मिलनी थी, क्योंकि मूल रूप में उसने वही बात दोहराई थी, जो पहले कही थी। प्रार्थना के बारे में हमें रहस्यमयी ''रहस्यों'' को जानने की आवश्यकता नहीं है; हमारे लिए केवल उसके बारे में जो हम जानते हैं कि हमें करना *चाहिए,* गम्भीर होना आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]विनती एक ही चेले ने की थी; परन्तु उसने ''*हमें* सिखा'' कहा, इसलिए वह सब चेलों के लिए कह रहा होगा। [2]जॉन टी. कैरल एण्ड जेम्स आर. कैरल, *प्रीचिंग द हार्ड सेइंग्स ऑफ़ जीज़स* (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1996), 120. [3]एफ़. वी. मैक्फेरिज, *लॉर्ड, टीच अस टू प्रेअ* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1956), 1. [4]चेलों द्वारा यीशु को प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहने पर, उसने मुख्यतया वही सच्चाइयां दोहराईं, जो उसने पहले कही थीं। उन्हें उसकी बातें भूल गई होंगी। यीशु की प्रार्थनाओं की सामर्थ देखकर उन्होंने सोचा होगा कि उस प्रार्थना में कुछ ''रहस्य'' है, जो उसने उन्हें नहीं बताया। जो भी हो, उन्हें पहले सुनाई गई सच्चाइयों को याद दिलाना आवश्यक था, जैसे हमें भी होता है। [5]देखें रोमियों 8:15; गलातियों 4:6; 1 पतरस 1:17. [6]उस समय की मुख्य दिलचस्पी मसीहा के राज्य की स्थापना थी। जो यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद के पहले पिन्तेकुस्त के दिन हुई (मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:8; प्रेरितों 2:1-4)। [7]संदर्भ से पता चल जाता है कि ''कर्ज़दार'' रुपयों का नहीं बल्कि पाप का है। यह बात किसी के लिए भी लागू होती है, जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया है। [8]मैक्फेरिज, 40. [9]वहीं, 47. [10]यह द *गॉस्पल ऑफ़ लुक,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 144 में विलियम बार्कले के शब्दों का सार है।

[11]एल्फ्रेड, लॉर्ड टैनिसन, ''मौर्टि ड' आर्थर,'' *द ग्रेट पोइम्स ऑफ़ द इंग्लिश लैंग्वेज,* संक. वालेस एलविन ब्रिगस (न्यू यॉर्क: ट्यूडोर, 1933), 795 से। [12]कैरोल एण्ड कैरोल, 122, 127 में उद्धृत, रिचर्ड फोस्टर, *प्रेयर, फाइंडिंग द हार्ट'स टू होम* (सैन फ्रैंसिसको: हार्पर, 1992)। [13]अमेरिका में आप खेलों के जूते के किसी ब्रांड के लिए विज्ञापन का नारा ले सकते हैं: ''जस्ट डू इट!'' [14]जोसेफ़ एम. स्क्रिवन, ''व्हट ए फ्रैंड वी हैव इन जीज़स'' के हिन्दी संस्करण से। [15]इसके अलावा, अधिकतर सराय इतनी बदनाम होती थीं कि कोई भी अपने मित्र को वहां भेजना पसन्द न करे। [16]जहां मैं रहता हूं वहां हम हंसाने वाली बात जोड़ सकते हैं: ''ट्रैफिक बहुत बेकार होगा। हो सकता है कि उसका टायर फट गया हो।'' [17]जहां मैं रहता हूं, वहां अपने क्षेत्र की रात भर खुलने वाली दुकानों का नाम जोड़ा जा सकता है। [18]दिन के समय दरवाज़े और खिड़कियां खुले रहते थे और रात को बन्द हो जाते थे। बन्द दरवाज़े और खिड़कियों का अर्थ होता था कि ''हमें अकेला छोड़ दो।'' [19]एक नाटकीय स्पर्श देने के लिए यहां और कहानी में जहां भी खटखटाने की बात आती है, आप वक्ता के स्टैंड पर खटखटा सकते हैं। दृष्टांत में खटखटाने का उल्लेख नहीं है, पर इसकी प्रासंगिकता है (लूका

11:9, 10)। सो रहे व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने के लिए खटखटाना स्वाभाविक ही होगा। यदि आप किसी के घर में बाहर दरवाज़े से उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए कोई और ढंग अपनाते हैं तो अपने क्षेत्र के अनुकूल उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। [20]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई पैंडलटन *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑफ़ ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 480.

[21]अमेरिका में, हम कह सकते हैं, ''फर्श पर दीवार से दीवार तक सटे हुए लोग थे।'' अधिकतर टीकाकार उन घरों के अन्य विवरण भी जोड़ते हैं, जैसा कि परिवार के सोने के लिए बना थड़ा, परन्तु इन विवरणों से कहानी बढ़ती नहीं लगती। कुछ लेखक यह जोड़ते हैं कि सर्दी के मौसम में, रात को पशु अन्दर रखे जाते थे। अब यदि किसी को रात के अन्धेरे में उठना हो तो गड़बड़ होना आसान था। [22]यह वाक्य मेरे मित्र, बॉब लियोन से लिया गया है, जो कहता है, ''यदि मम्मी खुश नहीं है, तो कोई भी खुश नहीं है!'' [23]क्रिस बुलर्ड, ''हाउ टू बी ऐन इन्टरसेसर,'' ओवरलैण्ड पार्क, कैनसस में, 13 मई 1985 को दिया गया संदेश। [24]यदि आप वहां रहते हैं, जहां आपके सुनने वाले विंस्टन चर्चिल के बारे में जानते हों, तो आप कह सकते हैं, ''विंस्टन चर्चिल के शब्दों में कहें तो प्रार्थना करना छोड़ें कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं, *कभी नहीं*।'' [25]''निरन्तर'' शब्द अधिकतर अनुवादों में नहीं मिलता, पर प्रयुक्त क्रिया में इसका संकेत मिलता है। [26]आप अपने सुनने वालों के लिए उपयुक्त उदाहरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं। मैं कह सकता हूं, ''व्यस्त राजमार्ग पर खेलने के लिए कहे जाने पर क्या किया जाए? यदि वे एक और आइसक्रीम खाने को कहें।'' आप अपने किसी बच्चे की विनती का उदाहरण भी दे सकते हैं, जिसे आपने न माना हो। [27]प्रार्थना के परमेश्वर के कई ढंगों से उत्तर पर चर्चा विस्तार से करने के लिए स्थान अनुमति नहीं देता, परन्तु आप विस्तार से बता सकते हैं। ''अभी रुक जा'' वाले उत्तर के सम्बन्ध में किसी ने कहा, ''परमेश्वर के घर में देर है अन्धेर नहीं।'' [28]हर मानवीय जीव (ज़िम्मेदारी की उम्र वाला) पाप से-अपने ही पाप से दागी है (रोमियों 3:23; 6:23)। [29]यह वैसी ही मछली थी जैसी यीशु ने पांच हज़ार को खिलाने के लिए इस्तेमाल की थी। [30]सुझाव दिया गया है कि इस उदाहरण में अपने बच्चों को *दांव पेच* सिखाने की कोशिश करते पिताओं को दिखाया गया है, क्योंकि छोटा सांप एक पतली मछली जैसा लग सकता है और इकट्ठा हुआ बिच्छु एक अण्डे जैसा लग सकता है। जब यीशु ने पहले इस उदाहरण का इस्तेमाल किया था, तो उसने रोटी और पत्थर की बात जोड़ी थी (मत्ती 7:9)। उस समय एक गोल, भूरे रंग का पत्थर छोटी रोटी जैसा ही दिखाई दे सकता था।

[31]लियोन मौरिस, *लूक* संशो. संस्क. टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्रीज़ (ग्रेंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1995), 214-15. एक प्रश्न उठ सकता है कि ''परमेश्वर से वह दान क्या *मांगा* जाए जिसकी प्रतिज्ञा उसने बपतिस्मा लेने वाले सब लोगों से की है?'' परमेश्वर से वही मांगना जिसकी उसने प्रतिज्ञा की हो, सही होता है। उदाहरण के लिए, बेशक परमेश्वर ने विश्वासी लोगों को जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रतिज्ञा की है (मत्ती 6:33), तौभी प्रतिदिन की रोटी मांगना उचित है (मत्ती 6:11)। मांगने से हमारे मनों पर यह प्रभाव पड़ता है कि सब अच्छे दान उसी की ओर से मिलते हैं। [32]यह वाक्य मैक्फेरिज, 3 से लिया गया था। [33]मैक्फेरिज, 5.